चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	25.08.2020	02	03

फसलों के अवशेष जलाने की बजाय वैज्ञानिक तरीके से उत्पादन करें: डॉ. अजय

हिसार| किसान फसलों के अवशेष जलाने की बजाय वैज्ञानिक तरीके से उनसे उत्पादन कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। ये विचार महाराणा प्रताप उद्यान विवि, करनाल के कुलसचिव डॉ. अजय सिंह यादव ने कहे। वह एचएयू के पौध रोग विभाग द्वारा खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि फसलों के अवशेष जलाने से पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता है, जो स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक है। किसान इन अवशेषों को जलाने की बजाय विभिन्न खुम्बों जैसे ढींगरी खुम्ब, दुधिया खुम्ब व धान के पुवाल की खुम्ब का उत्पादन करके लाभ कमा सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	25.08.2020	04	07-08

अवशेष जलाने के बजाय उनसे करें खुंबी उत्पादन

खेत खलिहान

मंथन

- मशरूम के उत्पादन पर एचएयू में ऑनलाइन प्रशिक्षण संपन्न
- विशेषज्ञ बोले- अवशेष का धुआं स्वास्थ्य के लिए हानिकारक

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के पौध रोग विभाग द्वारा खुंबी (मशरूम) उत्पादन तकनीक विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। इसमें महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय के कुल सचिव डा. अजय सिंह याद ने प्रतिभाग किया।

उन्होंने कहा कि किसान फसलों के अवशेष जलाने की बजाय विज्ञानिक तरीके से उनसे खुंबी का उत्पादन कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। फसलों के अवशेष जलाने से पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता है, जो स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक है। किसान इन अवशेषों को जलाने की बजाए विभिन्न खुंबों जैसे ढींगरी खुंबी, दुधिया खुंबी व धान के पुवाल की खुंबी का उत्पादन करके लाभ कमा सकते हैं।

प्रोटीन का भरपूर स्रोत है खुंबी : खुंबी एक संतुलित आहार है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 30-40 प्रतिशत तक पाई जाती है, इसलिए शाकाहारी लोगों के लिए प्रोटीन का एक अच्छा स्त्रोत है। इसके इलावा इसमें आवश्यक अमीनो एसिड, खनिज, विटामिन इत्यादि प्रचुर मात्रा में पाए जाते है। सब्जियों में विटामिन-डी खुंबी में पाया जाता है। पौध रोग विभाग के प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष डा. अजीत सिंह राठी ने खुंबी उत्पादन करने के लाभ व बेरोजगार युवकों व युवतियों के लिए रोजगार का एक अच्छा स्त्रोत बताया। यह प्रशिक्षण विभाग के विज्ञानियों डा. सतीश कुमार मेहता व डा. राकेश कुमार चुघ की देखरेख में आयोजित किया गया। इसमें प्रदेश के विभिन्न जिलों से 43 प्रतिभागी शामिल हुए।

स्वरोजगार के रूप में अपनाएं युवा : बाजवा

इस प्रशिक्षण में अग्रणी खुंबी/स्पान उत्पादक सरदार हरपाल सिंह बाजवा ने बताया कि प्रदेश के युवक व युवतियां सरकारी नौकरी के लिए इधर-उधर भटकने की बजाय खुंबी उत्पादन, प्रसंस्करण को एक स्वरोजगार की तरह अपनाएं व आत्मनिर्भर बनें। विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त वैज्ञानिक डा. आरएस टाया ने खुंबी में होने वाले रोगों व उनके प्रबंधन विषय पर बताया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	25.08.2020	01	01-04

मिशन एडमिशन स्नातक में दाखिला लेने वाले छात्र मेरिट व्यवस्था का कर रहे थे विरोध

एचएयू ने वापस लिया मेरिट से दाखिले का फैसला

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय अभी तक स्नातक कोर्स में मेरिट पर दाखिला लेने जा रहा था, मगर अब अचानक से इस फैसले को रद कर दिया गया है। अब स्नातक में दाखिले कैसे होंगे, इसका फैसला सरकार पर छोड़ दिया गया है। विवि के इस फैसले के बाद स्नातक कोर्स में दाखिले लेने वाले छात्रों को राहत मिल गई है। कोरोना के कारण कई बार इस फैसले को बदला गया है। पहले ऑनलाइन परीक्षा की बात चल रही थी फिर इस प्रपोजल को भी रद कर दिया गया था।

परा स्नातक कोर्स में प्रवेश परीक्षा की तारीख तय: परा स्नातक कोर्स में दाखिला प्रवेश परीक्षा के आधार पर ही लिया जाना है। इसके लिए छह, नौ, 12, 16 सितंबर को प्रवेश परीक्षा का समय रखा गया है। करीब तीन हजार अभ्यर्थियों की चार अलग-अलग दिनों में परीक्षा ली जाएगी। विवि ने इस बाबत आदेश भी जारी कर दिया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय। ● जागरण आर्काइव

कोर्ट जाने की तैयारी कर रहे थे अभ्यर्थी

एचएयू प्रदेश का एकमात्र कृषि विश्वविद्यालय है, यहां आसपास के प्रदेशों से भी छात्र पढ़ने के लिए आते हैं। इसमें दाखिले के लिए प्रवेश परीक्षा होती रही है, इस दफा पहली बार एचएयू स्नातक में मेरिट के आधार पर दाखिला लेने का फैसला ले लिया था। स्नातक कोर्स के अभ्यर्थियों को जैसे ही इस बात का पता चला तो उन्हें अपना नुकसान होता दिखाई दिया। क्योंकि कई छात्र प्रवेश परीक्षा में अच्छा स्कोर कर सकते थे, जबकि 12वीं में किसी कारण से उन्हें कम अंक मिले हैं। इसके साथ ही दूसरे राज्यों के बोर्ड की मार्किंग प्रक्रिया अलग-अलग है, इससे हरियाणा के छात्रों को नुकसान होता। इसको लेकर छात्रों ने ऑनलाइन विरोध शुरू भी कर दिया था, इसके साथ ही अभिभावकों के साथ इस फैसले के खिलाफ छात्र कोर्ट तक जाने की तैयार थे।

दूसरे विवि को देखकर ही लिया फैसला

इस मामले को लेकर एचएयू के कुलपति प्रो. समर सिंह का कहना है कि पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी सहित अन्य विवि ने भी स्नातक में मेरिट के आधार पर दाखिला लेने का फैसला लिया था। इसी आधार पर एचएयू ने भी इस प्रक्रिया को अपनाया। अब इस फैसले को बदलना पड़ रहा है। कुलपति ने बताया कि उन्होंने सरकार को इस बाबत पत्र लिखा है ताकि वह जल्द से जल्द दाखिले की प्रक्रिया में स्थिति स्पष्ट कर सकें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	**25.08.2020**	**04**	**01-02**

फसलों के अवशेष जलाने की बजाय उनसे करें खुंब उत्पादन : डॉ. अजय

हिसार। किसान फसलों के अवशेष जलाने की बजाय वैज्ञानिक तरीके से उनसे खुंब का उत्पादन कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। यह बात महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय करनाल के कुलसचिव डॉ. अजय सिंह यादव ने कही। वह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के पौध रोग विभाग द्वारा खुंब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि फसलों के अवशेष जलाने से पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता है, जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। किसान इन अवशेषों को जलाने की बजाय विभिन्न खुंबों जैसे ढींगरी खुंब, दूधिया खुंब और धान के पुवाल की खुंब का उत्पादन करके लाभ कमा सकते हैं। पौध रोग विभाग के प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष डॉ. अजित सिंह राठी ने खुंब उत्पादन करने के लाभ के बारे में बताया। यह प्रशिक्षण विभाग के वैज्ञानिकों डॉ. सतीश कुमार मेहता व डॉ. राकेश कुमार चुघ की देखरेख में आयोजित किया गया। इसमें प्रदेश के विभिन्न जिलों से 43 प्रतिभागी शामिल हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	25.08.2020	01	02-08

एचएयू : स्नातकोत्तर कोर्स में दाखिले के लिए प्रवेश परीक्षाएं छह सितंबर से

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर की प्रवेश परीक्षा का शेड्यूल जारी हो गया है। विभिन्न एमएससी और पीएचडी कोर्सों के लिए परीक्षाएं छह सितंबर से 16 सितंबर के बीच होंगी।

विवि प्रशासन के अनुसार पीजी कोर्सों में दाखिले के लिए करीब एक हजार से अधिक विद्यार्थियों ने आवेदन किया हुआ है। सबसे अधिक आवेदन एमएससी एग्रीकल्चर में दाखिले को लेकर आए हुए हैं। इस बार परीक्षा को छोड़कर दाखिले से संबंधित हर तरह की प्रक्रिया ऑनलाइन ही होगी।

एमएससी एमटेक और पीएचडी पाठ्यक्रमों में होने हैं दाखिले, शेड्यूल जारी

1000

से अधिक विद्यार्थियों ने पीजी में दाखिले के लिए किया है आवेदन

प्रवेश परीक्षा के परिणाम 22 सितंबर को

एमएससी एग्रीकल्चर, एमटेक और कॉलेज ऑफ होम साइंस से एमएससी के लिए प्रवेश परीक्षा छह सितंबर को होगी। इसके बाद सात सितंबर को आंसर की जारी की जाएगी। कॉलेज ऑफ बेसिक साइंस ऐंड ह्यूमैनिटिज और कॉलेज ऑफ फिशरीज साइंस में एमएससी के लिए प्रवेश परीक्षा नौ सितंबर को होगी और 10 से 12 सितंबर के बीच आंसर की जारी की जाएगी। इन सभी कोर्सों के लिए होने वाली प्रवेश परीक्षा के परिणाम 22 सितंबर को जारी किए जाएंगे।

पीएचडी के लिए प्रवेश परीक्षाएं 12 सितंबर से

कॉलेज ऑफ बेसिक साइंस ऐंड ह्यूमैनिटिज में पीएचडी में दाखिले के लिए प्रवेश परीक्षा का आयोजन 12 सितंबर को होगा और आंसर की 13 से 15 सितंबर के बीच जारी होगी। कॉलेज आफ एग्रीकल्चर, कॉलेज ऑफ होम साइंस, कॉलेज ऑफ फिशरीज और कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी में पीएचडी में दाखिले के लिए प्रवेश परीक्षा का आयोजन 16 सितंबर को होगा और 17 सितंबर को आंसर की जारी होगी। परिणाम 27 जुलाई को जारी किया जाएगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	**25.08.2020**	**02**	**01-02**

फसलों के अवशेष जलाने की बजाय उनसे करें खुंब उत्पादन : डा. यादव

हिसार, 24 अगस्त (ब्यूरो): किसान फसलों के अवशेष जलाने की बजाय वैज्ञानिक तरीके से उनसे खुंब का उत्पादन कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। ये विचार महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय करनाल के कुलसचिव डा. अजय सिंह यादव ने व्यक्त किए। वह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के पौध रोग विभाग द्वारा खुंब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित 3 दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि फसलों के अवशेष जलाने से पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता है, जो स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक है। किसान इन अवशेषों को जलाने की बजाय विभिन्न खुंबों जैसे ढींगरी खुंब, दुधिया खुंब व धान के पुवाल की खुंब का उत्पादन करके लाभ कमा सकते हैं।

इस प्रशिक्षण में अग्रणी खुंब/स्पान उत्पादक सरदार हरपाल सिंह बाजवा ने बताया कि प्रदेश के युवक व युवतियां सरकारी नौकरी के लिए इधर-उधर भटकने की बजाय खुंब उत्पादन/प्रसंस्करण को एक स्वरोजगार की तरह अपनाएं व आत्मनिर्भर बनें। सेवानिवृत्त वैज्ञानिक डा. सतपाल गोयल ने कम लागत से सफेद बटन मशरूम उत्पादन के गुर बताए। डा. गुरजीत सिंह ने दुधिया खुंब उत्पादन तकनीक पर जानकारी दी। विभाग के अन्य वैज्ञानिकों डा. मनमोहन सिंह व जगदीप सिंह ने खुंब उत्पादन के विभिन्न विषयों पर अपना व्याख्यान दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	25.08.2020	--	--

फसलों के अवशेष जलाने की बजाए उनसे करें खुंब उत्पादन : डॉ. अजय सिंह यादव

हिसार : किसान फसलों के अवशेष जलाने की बजाए वैज्ञानिक तरीक से उनसे खुंब का उत्पादन कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। ये विचार महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय, करनाल के कुल-सचिव डॉ. अजय सिंह यादव ने कहे। वे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के पौद्य रोग विभाग द्वारा खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि फसलों के अवशेष जलाने से पर्यावरण प्रदुषण बढ़ता है, जो स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक है। किसान इन अवशेषों को जलाने की बजाए विभिन्न खुम्बों जैसे ढींगरी खुम्ब, दुधिया खुम्ब व धान के पुवाल की खुम्ब का उत्पादन करके लाभ कमा सकते हैं। डॉ. अजय सिंह यादव ने बताया कि खुम्ब एक संतुलित आहार है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 30-40 प्रतिशत तक पाई जाती है, इसलिये शाकाहारी लोगों के लिए प्रोटीन का एक अच्छा स्त्रोत है। इसके इलावा इसमें आवश्यक अमीनो एसिड, खनिज, विटामिन इत्यादि प्रचुर मात्रा में पाए जाते है।

खुम्ब उत्पादन पर ऑनलाइन प्रशिक्षण संपन्न

सब्जियों में विटामिन-डी खुम्ब में पाया जाता है। पौद्य रोग विभाग के प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष डॉ. अजित सिंह राठी ने खुम्ब उत्पादन करने के लाभ व बेरोजगार युवकों व युवतियों के लिए रोजगार का एक अच्छा स्त्रोत बताया। यह प्रशिक्षण विभाग के वैज्ञानिकों डॉ. सतीश कुमार मेहता व डॉ. राकेश कुमार चुघ की देखरेख में आयोजित किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नित्य शक्ति टाइम्स	**24.08.2020**	--	--

फसलों के अवशेष जलाने की बजाए उनसे करें खुंब उत्पादन : डॉ. अजय

हकृवि में खुम्ब उत्पादन पर ऑनलाइन प्रशिक्षण का समापन

नित्य शक्ति टाइम्स न्यूज

हिसार। किसान फसलों के अवशेष जलाने की बजाए वैज्ञानिक तरीक से उनसे खुंब का उत्पादन कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। ये विचार महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय, करनाल के कुल-सचिव डॉ. अजय सिंह यादव ने कहे। वे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के पौद्य रोग विभाग द्वारा खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि फसलों के अवशेष जलाने से पर्यावरण प्रदुषण बढ़ता है, जो स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक है। किसान इन अवशेषों को जलाने की बजाए विभिन्न खुम्बों जैसे ढींगरी खुम्ब, दुधिया खुम्ब व धान के पुवाल की खुम्ब का उत्पादन करके लाभ कमा सकते हैं।

डॉ. अजय सिंह यादव ने बताया कि खुम्ब एक संतुलित आहार है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 30-40 प्रतिशत तक पाई जाती है, इसलिये शाकाहारी लोगों के लिए प्रोटीन का एक अच्छा स्त्रोत है। इसके इलावा इसमें आवश्यक अमीनो एसिड, खनिज, विटामिन इत्यादि प्रचुर मात्रा में पाए जाते है। सब्जियों में विटामिन-डी खुम्ब में पाया जाता है। पौद्य रोग विभाग के प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष डॉ. अजित सिंह राठी ने खुम्ब उत्पादन करने के लाभ व बेरोजगार युवकों व युवतियों के लिए रोजगार का एक अच्छा स्त्रोत बताया। यह प्रशिक्षण विभाग के वैज्ञानिकों डॉ. सतीश कुमार मेहता व डॉ. राकेश कुमार चुघ की देखरेख में आयोजित किया गया। इसमें प्रदेश के विभिन्न जिलों से 43 प्रतिभागी शामिल हुए।

मंहगी बिकने वाली खुम्ब है कीड़ा जड़ी खुंब : डॉ. चुघ

डॉ. राकेश चुघ ने ढ़ींगरी खुम्ब व कार्डिसैप खुम्ब के बारे में विस्तार से बताया। उन्होने बताया कि ढ़ींगरी खुम्ब को पैदा करना आसान है और इसका उत्पादन भी 20-25 दिनों में लिया जा सकता है। कीड़ा जड़ी खुम्ब के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि यह एक मंहगी बिकने वाली खुम्ब है तथा इसका प्रयोग दवाई की तरह किया जा सकता है।

इस प्रशिक्षण में अग्रणी खुम्ब/स्पान उत्पादक सरदार हरपाल सिंह बाजवा ने बताया कि प्रदेश के युवक व युवतियां सरकारी नौकरी के लिए इधर-उधर भटकने की बजाए खुम्ब उत्पादन/प्रसंस्करण को एक स्वरोजगार की तरह अपनाएं व आत्म निर्भर बनें। विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त वैज्ञानिक डॉ. आर.एस. टाया ने खुम्ब में होने वाले रोगों व उनके प्रबन्धन विषय पर विस्तार से बताया। सेवानिवृत्त वैज्ञानिक डॉ. सतपाल गोयल ने कम लागत से सफेद बटन मशरूम उत्पादन के गुर बताए। डॉ. गुरजीत सिंह ने दुधिया खुम्ब उत्पादन तकनीक पर जानकारी दी। विभाग के अन्य वैज्ञानिकों डॉ. मनमोहन सिंह व जगदीप सिंह ने खुम्ब उत्पादन के विभिन्न विषयों पर अपना व्याख्यान दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टूडे	**24.08.2020**	--	--

फसलों के अवशेष जलाने की बजाए उनसे करें खुंब उत्पादन : डॉ. यादव

खुम्ब उत्पादन पर ऑनलाइन प्रशिक्षण संपन्न

टुडे न्यूज | हिसार.

किसान फसलों के अवशेष जलाने की बजाए वैज्ञानिक तरीक से उनसे खुंब का उत्पादन कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। ये विचार महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय, करनाल के कुल-सचिव डॉ. अजय सिंह यादव ने कहे। वे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के पौद्य रोग विभाग द्वारा खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर में बोल रहे थे।

डॉ. अजय सिंह यादव ने बताया कि खुम्ब एक संतुलित आहार है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 30-40 प्रतिशत तक पाई जाती है, इसलिये शाकाहारी लोगों के लिए प्रोटीन का एक अच्छा स्त्रोत है। इसके इलावा इसमें आवश्यक अमीनो एसिड, खनिज, विटामिन इत्यादि प्रचुर मात्रा में पाए जाते है। सब्जियों में विटामिन-डी खुम्ब में पाया जाता है। पौद्य रोग विभाग के प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष डॉ. अजित सिंह राठी ने खुम्ब उत्पादन करने के लाभ व बेरोजगार युवकों व युवतियों के लिए रोजगार का एक अच्छा स्त्रोत बताया। यह प्रशिक्षण विभाग के वैज्ञानिकों डॉ. सतीश कुमार मेहता व डॉ. राकेश कुमार चुघ की देखरेख में आयोजित किया गया।

स्वरोजगार के रूप में अपनाएं युवा : बाजवा

प्रदेश के युवक व युवतियां सरकारी नौकरी के लिए इधर-उधर भटकने की बजाए खुम्ब उत्पादन/प्रसंस्करण को एक स्वरोजगार की तरह अपनाएं व आत्म निर्भर बनें। विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त वैज्ञानिक डॉ. आर.एस. टाया ने खुम्ब में होने वाले रोगों व उनके प्रबन्धन विषय पर विस्तार से बताया। सेवानिवृत्त वैज्ञानिक डॉ. सतपाल गोयल ने कम लागत से सफेद बटन मशरूम उत्पादन के गुर बताए। डॉ. गुरजीत सिंह ने दुधिया खुम्ब उत्पादन तकनीक पर जानकारी दी। विभाग के अन्य वैज्ञानिकों डॉ. मनमोहन सिंह व जगदीप सिंह ने खुम्ब उत्पादन के विभिन्न विषयों पर अपना व्याख्यान दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	**24.08.2020**	--	--

अवशेष जलाने के बजाए किसान खुंब उत्पादन कर बढ़ाएं आय : वैज्ञानिक

हिसार/24 अगस्त/रिपोर्टर

किसान फसलों के अवशेष जलाने की बजाए वैज्ञानिक तरीके से उनसे खुंब का उत्पादन कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। ये बात महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय, करनाल के कुल-सचिव डॉ. अजय सिंह यादव ने कही। वे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के पौद्य रोग विभाग द्वारा खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि फसलों के अवशेष जलाने से पर्यावरण प्रदुषण बढ़ता है, जो स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक है। किसान इन अवशेषों को जलाने की बजाए विभिन्न खुम्बों जैसे ढींगरी खुम्ब, दुधिया खुम्ब व धान के पुवाल की खुम्ब का उत्पादन करके लाभ कमा सकते हैं। डॉ. यादव ने बताया कि खुम्ब एक संतुलित आहार है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 30-40 प्रतिशत तक पाई जाती है, इसलिये शाकाहारी लोगों के लिए प्रोटीन का एक अच्छा स्त्रोत है। इसके इलावा इसमें आवश्यक अमीनो एसिड, खनिज, विटामिन इत्यादि प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। सब्जियों में विटामिन-डी खुम्ब में पाया जाता है। पौध रोग विभाग के प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष डॉ. अजीत सिंह राठी ने खुम्ब उत्पादन करने के लाभ व बेरोजगार युवकों व युवतियों के लिए रोजगार का एक अच्छा स्त्रोत बताया। यह प्रशिक्षण विभाग के वैज्ञानिकों डॉ. सतीश कुमार मेहता व डॉ. राकेश कुमार चुघ की देखरेख में आयोजित किया गया। इसमें प्रदेश के विभिन्न जिलों से 43 प्रतिभागी शामिल हुए। डॉ. राकेश चुघ ने ढ़ींगरी खुम्ब व कार्डिसैप खुम्ब के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि ढ़ींगरी खुम्ब को पैदा करना आसान है और इसका उत्पादन भी 20-25 दिनों में लिया जा सकता है। कीड़ा जड़ी खुम्ब के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि यह एक मंहगी बिकने वाली खुम्ब है तथा इसका प्रयोग दवाई की तरह किया जा सकता है। इस प्रशिक्षण में अग्रणी खुम्ब/स्पान उत्पादक सरदार हरपाल सिंह बाजवा ने बताया कि प्रदेश के युवक व युवतियां सरकारी नौकरी के लिए इधर-उधर भटकने की बजाए खुम्ब उत्पादन/ प्रसंस्करण को एक स्वरोजगार की तरह अपनाएं व आत्म निर्भर बनें। विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त वैज्ञानिक डॉ. आरएस टाया ने खुम्ब में होने वाले रोगों व उनके प्रबन्धन विषय पर बताया। सेवानिवृत्त वैज्ञानिक डॉ. सतपाल गोयल ने कम लागत से सफेद बटन मशरूम उत्पादन के गुर बताए। डॉ. गुरजीत सिंह ने दुधिया खुम्ब उत्पादन तकनीक पर जानकारी दी। विभाग के अन्य वैज्ञानिकों डॉ. मनमोहन सिंह व जगदीप सिंह ने खुम्ब उत्पादन के विभिन्न विषयों पर अपना व्याख्यान दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**24.08.2020**	--	--

हकृवि में खुम्ब उत्पादन पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण संपन्न

फसलों के अवशेष जलाने की बजाए उनसे करें खुंब उत्पादन : डॉ. यादव

पांच बजे न्यूज

हिसार।किसान फसलों के अवशेष जलाने की बजाए वैज्ञानिक तरीक से उनसे खुंब का उत्पादन कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। ये विचार महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय, करनाल के कुल-सचिव डॉ. अजय सिंह यादव ने कहे। वे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के पौद्य रोग विभाग द्वारा खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि फसलों के अवशेष जलाने से पर्यावरण प्रदुषण बढ़ता है, जो स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक है। किसान इन अवशेषों को जलाने की बजाए विभिन्न खुम्बों जैसे ढींगरी खुम्ब, दुधिया खुम्ब व धान के पुवाल की खुम्ब का उत्पादन करके लाभ कमा सकते है। डॉ. अजय सिंह यादव ने बताया कि खुम्ब एक संतुलित आहार है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 30-40 प्रतिशत तक पाई जाती है, इसलिये शाकाहारी लोगों के लिए प्रोटीन का एक अच्छा स्त्रोत है। इसके इलावा इसमें आवश्यक अमीनो एसिड, खनिज, विटामिन इत्यादि प्रचुर मात्रा में पाए जाते है। सब्जियों में विटामिन-डी खुम्ब में पाया जाता है। पौद्य रोग विभाग के प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष डॉ. अजित सिंह राठी ने खुम्ब उत्पादन करने के लाभ व बेरोजगार युवकों व युवतियों के लिए रोजगार का एक अच्छा स्त्रोत बताया। यह प्रशिक्षण विभाग के वैज्ञानिकों डॉ. सतीश कुमार मेहता व डॉ. राकेश कुमार चुघ की देखरेख में आयोजित किया गया। इसमें प्रदेश के विभिन्न जिलों से 43 प्रतिभागी शामिल हुए। डॉ. राकेश चुघ ने ढींगरी खुम्ब व कार्डिसेप खुम्ब के बारे में विस्तार से बताया। उन्होने बताया कि ढींगरी खुम्ब को पैदा करना आसान है और इसका उत्पादन भी 20-25 दिनों में लिया जा सकता है। कीड़ा जड़ी खुम्ब के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि यह एक मंहगी बिकने वाली खुम्ब है तथा इसका प्रयोग दवाई की तरह किया जा सकता है।

स्वरोजगार के रूप में अपनाएं युवा : बाजवा

इस प्रशिक्षण में अग्रणी खुम्ब/स्पान उत्पादक सरदार हरपाल सिंह बाजवा ने बताया कि प्रदेश के युवक व युवतियां सरकारी नौकरी के लिए इधर-उधर भटकने की बजाए खुम्ब उत्पादन/प्रसंस्करण को एक स्वरोजगार की तरह अपनाएं व आत्म निर्भर बनें। विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त वैज्ञानिक डॉ. आर.एस. टाया ने खुम्ब में होने वाले रोगों व उनके प्रबन्धन विषय पर विस्तार से बताया। सेवानिवृत्त वैज्ञानिक डॉ. सतपाल गोयल ने कम लागत से सफेद बटन मशरूम उत्पादन के गुर बताए। डॉ. गुरजीत सिंह ने दुधिया खुम्ब उत्पादन तकनीक पर जानकारी दी। विभाग के अन्य वैज्ञानिकों डॉ. मनमोहन सिंह व जगदीप सिंह ने खुम्ब उत्पादन के विभिन्न विषयों पर अपना व्याख्यान दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	**24.08.2020**	--	--

कार्यक्रम हकृवि में आयोजित खुम्ब उत्पादन पर ऑनलाइन प्रशिक्षण संपन्न

फसलों के अवशेष जलाने की बजाए उनसे करें खुंब उत्पादन : डॉ. अजय सिंह यादव

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। किसान फसलों के अवशेष जलाने की बजाए वैज्ञानिक तरीक से उनसे खुंब का उत्पादन कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। ये विचार महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय, करनाल के कुल-सचिव डॉ. अजय सिंह यादव ने कहे। वे हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के पौद्य रोग विभाग द्वारा खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि फसलों के अवशेष जलाने से पर्यावरण प्रदुषण बढ़ता है, जो स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक है। किसान इन अवशेषों को जलाने की बजाए विभिन्न खुम्बों जैसे ढींगरी खुम्ब, दुधिया खुम्ब व धान के पुवाल की खुम्ब का उत्पादन करके लाभ कमा सकते हैं। डॉ.यादव ने बताया कि खुम्ब एक संतुलित आहार है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 30-40 प्रतिशत तक पाई जाती है, इसलिये शाकाहारी लोगों के लिए प्रोटीन का एक अच्छा स्त्रोत है।

पौद्य रोग विभाग के प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष डॉ. अजित सिंह राठी ने खुम्ब उत्पादन करने के लाभ व बेरोजगार युवकों व युवतियों के लिए रोजगार का एक अच्छा स्त्रोत बताया। यह प्रशिक्षण विभाग के वैज्ञानिकों डॉ. सतीश कुमार मेहता व डॉ. राकेश कुमार चुघ की देखरेख में आयोजित किया गया। इसमें प्रदेश के विभिन्न जिलों से 43 प्रतिभागी शामिल हुए। डॉ. राकेश चुघ ने ढ़ींगरी खुम्ब व कार्डिसैप खुम्ब के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि ढ़ींगरी खुम्ब को पैदा करना आसान है और इसका उत्पादन भी 20-25 दिनों में लिया जा सकता है। कीड़ा जड़ी खुम्ब के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि यह एक मंहगी बिकने वाली खुम्ब है तथा इसका प्रयोग दवाई की तरह किया जा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	24.08.2020	--	--

फसलों के अवशेष जलाने की बजाए उनसे करें खुब उत्पादनः डॉ. यादव

पल पल न्यूजः हिसार, 24 अगस्त। किसान फसलों के अवशेष जलाने की बजाए वैज्ञानिक तरीक से उनसे खुंब का उत्पादन कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। ये विचार महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय, करनाल के कुल-सचिव डॉ. अजय सिंह यादव ने कहे। वे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के पौध रोग विभाग द्वारा खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि फसलों के अवशेष जलाने से पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता है, जो स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक है। किसान इन अवशेषों को जलाने की बजाए विभिन्न खुम्बों जैसे ढींगरी खुम्ब, दुधिया खुम्ब व धान के पुवाल की खुम्ब का उत्पादन करके लाभ कमा सकते हैं। डॉ. अजय सिंह यादव ने बताया कि खुम्ब एक संतुलित आहार है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 30-40 प्रतिशत तक पाई जाती है, इसलिये शाकाहारी लोगों के लिए प्रोटीन का एक अच्छा स्त्रोत है। इसके इलावा इसमें आवश्यक अमीनो एसिड, खनिज, विटामिन इत्यादि प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। सब्जियों में विटामिन-डी खुम्ब में पाया जाता है। पौध रोग विभाग के प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष डॉ. अजित सिंह राठी ने खुम्ब उत्पादन करने के लाभ व बेरोजगार युवकों व युवतियों के लिए रोजगार का एक अच्छा स्त्रोत बताया। यह प्रशिक्षण विभाग के वैज्ञानिकों डॉ. सतीश कुमार मेहता व डॉ. राकेश कुमार चुघ की देखरेख में आयोजित किया गया। इसमें प्रदेश के विभिन्न जिलों से 43 प्रतिभागी शामिल हुए। डॉ. राकेश चुघ ने ढ़ींगरी खुम्ब व कार्डिसैप खुम्ब के बारे में विस्तार से बताया। इस प्रशिक्षण में अग्रणी खुम्ब/स्पान उत्पादक सरदार हरपाल सिंह बाजवा ने बताया कि प्रदेश के युवक व युवतियां सरकारी नौकरी के लिए इधर-उधर भटकने की बजाए खुम्ब उत्पादन/प्रसंस्करण को एक स्वरोजगार की तरह अपनाएं व आत्म निर्भर बनें। विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त वैज्ञानिक डॉ. आर.एस. टाया ने खुम्ब में होने वाले रोगों व उनके प्रबन्धन विषय पर विस्तार से बताया। सेवानिवृत्त वैज्ञानिक डॉ. सतपाल गोयल ने कम लागत से सफेद बटन मशरूम उत्पादन के गुर बताए। डॉ. गुरजीत सिंह ने दुधिया खुम्ब उत्पादन तकनीक पर जानकारी दी।